॥ श्रीः ॥

उज्जैन क्षेत्र महात्म्य

श्रीमान् महाराजा जार्ज जिवाजीराव सेंधिया गवालियर

जिसको

आनन्दीलाल बुकसेलर, पब्लिशर

उज्जैन ने भक्तजनों के लाभार्थ

प्रकाशित किया।

दूसरीवार ४००० } सन् १९३३ { मूल्य प्रति पुस्तक =)

सत्यव्रत शर्मा द्वारा शान्तिप्रेस, शीतलागली आगरा में मुद्रित।

उज्जैन में यात्रियों के ठहरने के लिए स्थान

(१) जीजामहाराज की धर्मशाला—स्टेशन के पास।

(२) होटल—स्टेशन से १½ फर्लाङ्ग फ्रीगंज में।

(३) वेंकटेश्वर धर्मशाला—क्षिप्रा नदी के किनारे।

(४) गजाधर की धर्मशाला—हरसिद्धि दरवाजे।

(५) मोड़ों की धर्मशाला पंचायती—नदी दरवाजे पर।

(६) हलवाई की धर्मशाला—नदी दरवाजे के नीचे।

(७) पंडों के घर।

उज्जैन के मशहूर स्थान

कालियादह महल—उज्जैन से उत्तर ४ मील।

सिद्धिवट—भैरवगढ़ में २ मील।

कालभैरव—भैरवगढ़ में २ मील।

कालिकादेवी—गढ़ पर १½ मील।

भरथरी की गुफा—गढ़ पर १½ मील।

मंगलेश्वर—उज्जैन से उत्तर २ मील।

गंगाघाट—उज्जैन से उत्तर २ मील।

अंकपात—उजैन से उत्तर १½ मील।

त्रिवेणी (नवग्रह)—उज्जैन से दक्षिण ३ मील।

चिन्तामणिगणपति—उज्जैन से दक्षिण ३ मील।

वेधशाला—उज्जैन से दक्षिण १½ मील।

क्षिप्राजी के घाट—उज्जैन से पश्चिम १ मील।

श्रीरणजीतहनूमान—उज्जैन से पश्चिम २ मील।

श्रीगोपालमन्दिर—उज्जैन के मध्य में।

❀ श्री ❀

उज्जैन क्षेत्र महात्म्य

क्षेत्र भूमि वर्णन

उज्जैन यह क्षेत्र एक योजन यानी चार कोस प्रमाण का पृथ्वी पर है इस ज़मीन की आकृत्ति चौकोन है और इसके मध्य-बिन्दु में क्षेत्राधिपति श्री महाकालेश्वर का ज्योतिर्लिङ्ग विराजमान है और उज्जैन क्षेत्र के नाभिस्थान से ४—४ कोस की दूरी पर इसके पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर द्वार हैं उन पर पिंगलेश्वर, कायावरोहणेश्वर, बिल्वेश्वर और दर्दुरेश्वर नामक चार रक्षपाल चारों दिशाओं के रक्षक हैं और क्षेत्र के मध्य-बिंदु पर श्री महाकालेश्वर महाराज का मंदिर है।

भारतवर्ष के सर्व क्षेत्रों से अवन्तिकापुरी का महात्म अधिक है क्योंकि भरतखण्ड एक महा क्षेत्र है इसमें अवन्तिकापुरी इसका मध्य-बिंदु नाभिस्थान है और इसके पूर्व में श्री जगन्नाथ-पुरी, दक्षिण में श्री रामेश्वर, पश्चिम में श्री द्वारिकापुरी और उत्तर में श्री बद्रिकाश्रम ये चार द्वार हैं इन्हीं को चार धाम कहते हैं। इस महाक्षेत्र के

नाभि स्थल अवन्तिकाक्षेत्र के मध्य में श्री महा-कालेश्वर नामक शिवलिंग इस महाक्षेत्र के अधि-ष्ठाता हैं। इस प्रकार भारतवर्ष के सर्व क्षेत्रों में अवन्तिकापुरी को मेरुस्थान मिला है इसलिए यह पुरी सर्वश्रेष्ठ मानी गई है। यह क्षेत्र पुरा-णादि ग्रंथों में उज्जयिनी या अवंतिका इस नाम से और इस समय में उज्जैन नामक शहर से प्रसिद्ध है परन्तु क्षेत्रमहात्मों में जो इसके ६ नौ नाम दिये गये हैं वे प्रति कल्पों में बदलते गये हैं ऐसा वर्णन किया गया है।

(१) कनकशृंगा (२) कुशस्थली (३) अवन्तिका (४) प्रतिकल्पा (५) पद्मावती (६) कुमुद्वती (७) अमरावती (८) विशाला (६) उज्जयिनी।

ऐसे—अयोध्या, मथुरा,, माया, काशी, कांची अवन्तिका, पुरी, द्वारावती, चैव शप्ते तामोक्षदा-यिका: इस श्लोक में ऊपर लिखे माफ़िक सात क्षेत्र मोक्ष के देने वाले बतलाये गये हैं लेकिन इनमें भी अवन्तिकापुरी ही सर्वश्रेष्ठ है। वह इस वास्ते कि—

"स्मशानमूखरं क्षेत्रं पीठं तु वनमेव च;
पंचैकत्र न लभ्यंते महाकालवनादृते ।"

इस क्षेत्र में मोक्ष-प्राप्ति के लिए साधन भूत जो पांच तत्व (१) स्मशान (२) ऊषर (३) वन (४) क्षेत्र (५) पीठ यह पांच महापुण्य कारक मोक्ष को देने वाले योग इकट्ठे हुये हैं। ये अवन्तिका क्षेत्र के सिवाय अन्य किसी क्षेत्र में एकत्र नहीं हैं इसलिए यह क्षेत्र शेष सर्व क्षेत्रों से श्रेष्ठ माना जाता है उक्त पांचों के लक्षण निम्न लिखित हैं।

(१) स्मशान उसे कहते हैं जहां भूतों का निवास स्थान है यह जगह शंकर को बड़ी प्रिय है।

(२) ऊषर उसे कहते हैं जिस भूमि में मृत्यु होने से फिर जन्म धारण नहीं करना पड़ता।

(३) बन यानी जंगल इसको महाकाल बन कहते हैं।

(४) क्षेत्र उसे कहते हैं जो पापों को नाश करता है।

(५) पीठ उसे कहते हैं जहां देवी का स्थान है इसको हरसिद्ध पीठ कहते हैं।

इस क्षेत्र में जितनी ज़मीन है वह सब शिव लिंग मय है और जितने जल के स्थान हैं वे सब तीर्थमय हैं ऐसा क्षेत्र महात्मों में वर्णन है उन में से मुख्य-मुख्य देवता और तीर्थस्थान नीचे लिखे माफ़िक़ हैं। भक्त जन दर्शनों का लाभ अवश्य लेकर अपनी यात्रा को सफल करेंगे।

(१) श्री महाकालेश्वर-क्षेत्राधिपति

इस क्षेत्र के नाभिस्थान मध्य बिन्दु में विराजमान हैं।

नदियां	४	देवी	२४
ईश्वर	८४	अष्टमातृका	८
गुह्यलिंग	६	विष्णु	१०
रुद्र	११	महावीर	४
विनायक	६	आदित्य	१२
नवग्रह	९	यात्रा	९
भैरव	८	अन्यतीर्थ	८८

अवन्तिका क्षेत्र का वर्णन।

श्रीमहाकालेश्वर

यह बारह ज्योतिर्लिङ्गों में से एक लिंग है जो भरतखंड के मध्य बिंदु अवन्तिका क्षेत्र के नाभि

स्थानमें स्थिति है जिनका मंदिर गुफ़ाके माफ़िक बड़ा भारो बना हुआ है इस मन्दिर के सब से नीचे महादेव जी का स्थान है वहाँ पर श्रीमहाकालेश्वर का ज्योतिर्लिङ्ग दैदीप्यमान है इस स्थान के सामने एक चौरस कुण्ड बना हुआ है इस कुण्ड का नाम कोटतीर्थ है यह कोटतीर्थ बारह मास में तीन स्वरूप धारण करता है यानी शरद, वर्षा, ग्रीष्म ऋतुओं में इसके जल के तीन रंग बदल जाते हैं इस तीर्थ में स्नान और दर्शन करने से सर्व पाप नाश होते हैं ।

श्लोक

आकाशे ताड़के लिङ्ग पाताले हटकेश्वरम् ।
मृत्यलोके महाकालं लिंगत्रय नमोस्तुते ॥

इस देवस्थान में श्रीमंत महाराजा सेंधिया आलीजाह बहादुर गवालियर नरेश. होलकर सरकार और पवांर सरकार की तरफ़ से काफ़ी प्रबन्ध और नेमनुख है इससे महाकालेश्वर की त्रिकाल पूजा होती है उसमें प्रातःकाल की भस्म पूजा व आरती, मध्यान काल में भोगपूजा और

सायंकाल की पुष्प पूजा ये त्रिकाल पूजा अवश्य ही देखने के योग्य हैं।

नदी ४

(१) क्षिप्रा (२) नीलगंगा (३) गन्धर्वती (४) नवनदी। इनमें क्षिप्रा नदी बड़ी है और इसके किनारे पर उज्जैन शहर बसता है बाक़ी नदियों का प्रवाह इस समय में नहीं दीखता केवल नाम ही शेष है।

ईश्वर ८४

उज्जैन के चौरासी लिंग (महादेवों) की यात्रा

नं० नाम महादेव पता देवस्थान

१ अगस्तेश्वर—हरसिद्धि देवी के मंदिर के पीछे।
२ गुह्येश्वर—पिशाचमोचन के पास दक्षिण में।
३ ढुण्ढेश्वर—पिशाचेश्वर के पास। (रामसीढ़ी के नीचे)।
४ डमरुकेश्वर—रामसीढ़ी के ऊपर।
५ अनादिकल्पेश्वर—वृद्धमहाकाल के पश्चिम में।
६ स्वर्णजालेश्वर—रामसीढ़ी पर ढुण्ढेश्वर और डमरुकेश्वर के बीच में।

७ त्रिविष्टपेश्वर—महाकाल में एकादशरुद्र व द्वादश ज्योतिर्लिंगों के दक्षिण में।

८ कपालेश्वर—ब्रह्मपोल में सोमेश्वर व इन्द्रेश्वर के बीच में।

९ स्वर्गद्वारेश्वर—नलियाबाखल में बेगमपुरे के रास्ते पर कुवे के पास नाले पर।

१० कर्कोटेश्वर—हरसिद्धि के मंदिर के पास उत्तर में।

११ सिद्धेश्वर—सिद्धवट के पश्चिम में सेठ रामचन्द्र जी की धर्मशाला के पास।

१२ लोकपालेश्वर—हरसिद्धि दर्वाज़े के पास योगेश्वर के दक्षिण में।

१३ कामेश्वर—गंधवती तीर्थ पर हैं इन्हें मनकामनेश्वर भी कहते हैं।

१४ कुटुम्बेश्वर—सिंहपुरी में मंगलेश्वर के सामने।

१५ इन्द्रद्युमनेश्वर—बोखी माता की गली में मोदी जी की हवेली के पास।

१६ ईशानेश्वर—मोदी की गली में कूवा के पास।

१७ अप्सरेश्वर—मोदी की गली में कुवा व कलकलेश्वर के उत्तर में।

१८ कलकलेश्वर—मोदी जी के कुवे के पास उत्तर में।

१९ नागचण्डेश्वर—पटनीबाज़ार में नागचन्द्रेश्वर।

२० प्रतिहारेश्वर—नागचण्डेश्वर के पास।

२१ कुक्कुटेश्वर—गंधवती पर कामेश्वर के पूर्व में।

२२ कर्कटेश्वर—दानीदर्वाज़े पर रामगली के सामने।

२३ मेघनादेश्वर—सराफ़े में नरसिंह मंदिर के पास की गली में कल्यानराय की गली।

२४ महालयेश्वर—खत्रीवाड़े में अंनाजी दामोदर की गली में अन्दर जाकर।

२५ मुक्तेश्वर—खत्रीवाड़े में श्रीमाली की गली में।

२६ सोमेश्वर—ब्रह्मपोल में कपालेश्वर से दक्षिण में।

२७ अनर्केश्वर—मकोड़िया आमके पास गयाकोठा के समीप।

२८ जटेश्वर—गयाकोठा पर अनर्केश्वर के उत्तर में।

२९ रामेश्वर—सतीदरवाज़े के पास की गली में।

३० च्यवनेश्वर—सोलासागर पर ईदगाह के पूर्व में।

३१ खण्डेश्वर—खिलचीपुर गांव से लगा हुवा है।

३२ पत्तनेश्वर—खिलचीपुर के पुल के पास आगर सड़क पर।

३३ आनन्देश्वर—आलपुरा में, आपाराव के गणपती के पास।

३४ कंथडेश्वर—भैरवगढ़ में जहाज़ वाले की धर्मशाला के सामने।

३५ इन्द्रेश्वर—ब्रह्मपोल और आलपुरा के बीच में।

३६ मार्कण्डेश्वर—अंकपात में विष्णुसागर पर।

३७ शिवेश्वर—अंकपात में रामजी के मंदिरके नीचे बुर्ज में।

३८ कुसुमेश्वर—अङ्कपात में जनार्दन जी के मंदिर के नीचे बुर्ज में।

३९ अक्रूरेश्वर—अङ्कपात के कोट के पश्चिम दरवाज़े के सामने।

४० कुण्डेश्वर—गोमतीकुण्ड पर।

४१ लुम्पेश्वर—भैरवगढ़ में क़िले के आग्नेय कोणमें पीपल के नीचे।

४२ गंगेश्वर—खड़गता संगम पर मंगलेश्वर से उत्तर में।

४३ मंगलेश्वर—मंगलतीर्थ पर ऊंचे पर बड़ा मंदिर।

४४ उत्तरेश्वर—मंगलेश्वर के दक्षिण में छतरीके पास।

४५ त्रिलोचनेश्वर—नामदारपुरेमें लाल इमलीके नीचे।

४६ वीरेश्वर—आष्टेवाले के घर के सामने बड़ के नीचे।

४७ नूपुरेश्वर—डाबरी में जहाज़वाले के घरकेपीछे।

४८ अभयेश्वर—दानीदरवाज़े की सड़कपर गणेश जी के मन्दिर के पश्चिम में।

४६ पृथुकेश्वर—केदारेश्वर के मंदिर के द्वार में।
५० स्थावरेश्वर - नई पेठ में सखरवाड़ी के सामने।
५१ शूलेश्वर—दानोदरवाज़े पुरभिया बाखल में।
५२ ॐकारेश्वर – ढाबा, तेलीवाड़ा और खटीकवाड़ी के बीच में रास्ते पर।
५३ विश्वेश्वर—खटीकवाड़ी में।
५४ नीलकंठेश्वर—गढ़पर जाटकी बावड़ी के पास।
५५ सिंहेश्वर—गढ़पर थलमलगणेश के उत्तर में।
५६ रेवंतेश्वर—कार्तिकचौक में घंटेश्वर के पूर्व में।
५७ घंटेश्वर – कार्तिकचौक में रेवंतेश्वर के पश्चिम में।
५८ प्रयागेश्वर—मकरप्रयाग तीर्थ, त्रिप्रातटपर।
५६ सिद्धेश्वरनं०२-खत्रीवाड़े में पीपल के नीचे।
६० मातंगेश्वर—पिंजाखाड़ी में सड़क के किनारे।
६१ सौभाग्येश्वर – खत्रीवाड़े में काशीबा जामदार के घर में।
६२ रूपेश्वर—सिंहपुरी में जनार्दन जी की गली में।
६३ सहस्रधेनुकेश्वर – वृन्दाबनपुरे में तिलभांडेश्वर के रास्ते पर ऊंची टेकरी पर।
६४ पशुपतीश्वर - जानसापुरे में।
६५ ब्रह्मेश्वर—दानोदरवाज़े के पास।
६६ जल्पेश्वर—सोमतीर्थ पर पीपल के नीचे।

६७ केदारेश्वर—केदारतीर्थ पर रेती में।

६८ पिशाचमुक्तेश्वर—नदी किनारे पिशाच मोचन तीर्थ पर।

६९ संगमेश्वर—जैरामदास सनेहीराम के बगीचे के उत्तर में।

७० दुर्धरेश्वर—गंधवती तीर्थ पर परिक्रमा के पीपल के नीचे।

७१ प्रयागेश्वर नं०२—हरसिद्धि दरवाज़े लोकपालेश्वर के पास।

७२ चन्द्रादित्येश्वर—महाकाल में कोट तीर्थ पर धर्मशाला में।

७३ करभेश्वर—भैरवगढ़ में कालभैरव के मन्दिर के सामने टेकरी पर।

७४ राजस्थलेश्वर—भागसीफला में रणछोड़राय की गली में।

७५ बटेश्वर—भैरवगढ़ में सिद्धेश्वर और सिद्धवट के बीच में।

७६ अरुणेश्वर—पिशाचमुक्तेश्वर के सामने

७७ पुष्पदंतेश्वर—सिंहपुरी में सुनारबाखल में।

७८ अभिमुक्तेश्वर—सिंहपुरी में राजाजी व्यास की हवेली के पास।

७६ हनुमतेश्वर—गढ़पर थलमलगणेश के उत्तर में।

८० स्वप्नेश्वर—महाकाल में, हरीविठ्ठल के मन्दिर के पास।

८१ पिंगलेश्वर—पूर्व द्वार पर (पिंगलेश्वर नामक गांव में) उज्जैन से १ योजन।

८२ कायावरोहणेश्वर—दक्षिण द्वार पर (करनकोक-लाखेड़ी नामक गांवमें) उज्जैन से १ योजन।

८३ बिल्केश्वर—पश्चिम द्वार पर (आमोदिया नामक गांव में) उज्जैन से १ योजन।

८४ दर्दुरेश्वर—उत्तर द्वारपर (आमोदिया नामक गांव में) उज्जैन से १ योजन।

इनमें प्रयागेश्वर और सिद्धेश्वर यह नाम जो दो बार आये हैं वे एक ही नाम के २ दो लिंग अलग-अलग लिंग हैं।

इनमें से ८१ से ८४ तक ४ लिंग ये क्षेत्र के चारों दिशा के ४ रक्षपाल हैं इनको चार द्वार कहते हैं।

गुह्यलिंग ६

१ शुक्रेश्वर २ भीमेश्वर
३ गर्गेश्वर ४ कामेश्वर
५ चूड़ामणेश्वर ६ चंडेश्वर

रुद्र ११

१ कपर्दी—तिल भांडेश्वर के पास।
२ कपाली—ब्रह्म पोल में।
३ कलानाथ—ओखरेश्वर के घाटपर।
४ वृषासन—महा कालेश्वर में।
५ त्र्यम्बक—ओखरेश्वर में।
६ शूलपाणि—महाकालेश्वर में।
७ चीरवासा—महाकालेश्वर में।
८ दिगम्बर—जाट के कुवे पर।
९ गिरीश—कालिका जी के मन्दिर में।
१० कामचारी—नयेपुरे, वृन्दाबनपुरे में।
११ शर्व—सर्वाङ्ग भूषणतीर्थपर।

विनायक ६

१ विघ्नविनायक—चिंतामणिगणेश जवासियागाँव में।
२ अविघ्नविनायक—अंकपाल में खाकी अखाड़े के सामने।

३ दुर्मुखविनायक—अंकपात में खाकी अखाड़े के पीछे।

४ सुमुखविनायक थलमलगणेश, गढ़पर।

५ मोदविनायक—महाकाल में कोट तीर्थ पर।

६ प्रमोदविनायक—अगस्त्येश्वर के पास।

नवग्रह लिंग ९

१ शंकरादित्य—ओखरनाथ से उरली तरफ नदी में।

२ सोमेश्वर—सोमतीर्थ पर।

३ मंगलेश्वर- मंगल तीर्थ पर।

४ बुधेश्वर—सोमतीर्थ पर।

५ बृहस्पतेश्वर - गोलावाड़ी में।

६ शुक्रेश्वर—इनका पता नहीं लगता।

७ स्थावरेश्वर—पटेल बाखल में।

८ राहवेश्वर—पटेल बाखल में।

९ केत्वेश्वर—पटेल बाखल में।

भैरव ८

१ दंडपाणि भैरव—देवप्रयाग के पास।

२ विक्रान्त भैरव—ओखरेश्वर के पास।

३ महाभैरव सिंहपुरी में।

४ क्षेत्रपाल भैरव—सिंहपुरी में कुटुम्बेश्वर के पास।

५ बटुक भैरव—ब्रह्म पोल में।
६ आनन्द भैरव मल्लिकार्जुन तीर्थ पर।
७ गोरा भैरव—गढ़ पर कुमारी हनूमान के पास।
८ काल भैरव—भैरवगढ़ में।

देवी २४

१ महामाया—चौबीस खंबे देवी को कहते हैं।
२ कपालमातृका—सिंहपुरी में रूपेश्वरके मन्दिर में।
३ अंबिका—स्वर्गद्वारेश्वर के समीप।
४ शीतला—पातलवाड़ी में।
५ अष्टसिद्धिदा—अबदालपुरा में नौ दुर्गा में।
६ तामसी माया—नक्खास के तालाब पर।
७ पार्वती—नवनदी संगम पर।
८ योगिनी—चौंसठ योगिनी, नयेपुरे में।
९ चूड़ामणि—कौमारी, हरसिद्धि के पीछे।
१० भगवती—सिंहपुरी में रूपेश्वर के पास।
११ लोकमातृका—कृतिका, सिद्धवट के पास।
१२ चर्पटमातृका—सिद्धेश्वर के पास।
१३ वटमातृका—सिद्धवट के पास।
१४ सरस्वती—कार्तिक चौक में।
१५ महालक्ष्मी—नई पैंठ में।

१६ कालिका—सिंहपुरी में।

१७ महाकाली—गढ़ की कालिका, गढ़ पर।

१८ चामुंडा—गढ़ की कालिका में।

१६ ब्रह्मचारिणी—अबदालपुरे में।

२० योगमाया - सिंहपुरी में कालिका के पास।

२१ वाराही—नागादेव की गली में।

२२ विन्ध्यवासिनी—गढ़ की कालिका के मन्दिर के सामने।

२३ अम्बा—नामदारपुरा में।

२४ अम्बालिका—नामदारपुरा में।

अष्टमातृका ८

१ उमा	२ चंडी
३ ईश्वरी	४ गौरी
५ हरसिद्धि	६ वटयक्षिणी
७ वीरभद्रा	८ रौद्री

इनमें की पांचवीं माता हरसिद्धि जोगीपुरे में रुद्रसागर के किनारे पर हैं शेष सात माताओं के स्थानों का पता नहीं लगता।

विष्णु १०

१ वासुदेवादि चतुर्व्यूहमूर्ति—गढ़ पर कुमारी हनूमान के मन्दिर के सामने।

२ अनन्त नारायण—अनन्त पैंठ में त्रिप्रातट पर।

३ बलदाऊजी—अंकपात में।

४ जनार्दनजी—अंकपात में।

५ नारायण—कपिलतीर्थ पर।

६ हृषीकेशव—अंकपात में।

७ वाराह भगवान—पटेलबाखल में।

८ धरणीधर—नागतलाई पर।

९ वामन—वामन कुण्ड पर।

१० शेषशायी—क्षीरसागर पर।

महावीर ४

१ हनूमान—महाराज बाग़ में।

२ ब्रह्मचारी—नरसिंह तीर्थ पर।

३ कुमारी हनूमान—गढ़ पर।

४ वायुसुत—सब्ज़ीमंडी में।

इनके सिवाय इस समय में श्री रणजीत हनूमान का मन्दिर जो त्रिप्राजी के पार है, बड़ा ही चैतन्य और दैदीप्यमान है और खेड़ापती, गिरनारी, खड़े हनूमान दर्शन करने ही योग्य हैं।

आदित्य १२

१ अरुण	७ अंशुमान
२ सूर्य	८ सुवर्णरेता

३ वेदांग ९ अहस्कर्ता

४ भानु १० मित्र

५ इन्द्र ११ विष्णु

६ रवि १२ सनातन

इनके स्थानों का इस समय पता नहीं लगता।

यात्रा ९

१ नित्ययात्रा २ चतुर्दश यात्रा

३ महाकाल यात्रा ४ विष्णु यात्रा

५ पंचेशानीयात्रा ६ अष्टतीर्थ यात्रा

७ नगर प्रदक्षिणा ८ नरदीप यात्रा

९ सप्तसागर यात्रा

इन अलग अलग यात्राओं के अलहदा-अलहदा देवता भी हैं जो कि नीचे लिखे माफ़िक हैं:—

[१ नित्य यात्रा]

इसमें के तीर्थ और देवता।

१ क्षिप्रास्नान २ नागचंद्रेश्वर दर्शन

३ कोटेश्वर दर्शन ४ श्रीमहाकाल दर्शन

५ अवन्तीदेवी दर्शन ६ हरसिद्धि देवी दर्शन

७ अगस्तेश्वर दर्शन

[२ चतुर्दश यात्रा]

पहिले पिशाच मुक्तेश्वर तीर्थ पर चतुर्दशी के दिन स्नान और तिल दान करने के बाद नीचे लिखे माफ़िक १४ देवताओं के दर्शनों का लाभ लेना चाहिये।

१ गुह्येश्वर का दर्शन। २ रुद्रसागर में स्नान करके अगस्तेश्वर का दर्शन। ३ क्षिप्राजी का स्नान करके ढुंढेश्वर। ४ डमरुकेश्वर। ५ अनादि-कल्पेश्वर। ६ सिद्धेश्वर। ७ वीरभद्रा देवी। ८ स्वर्णजालेश्वर के दर्शन करना चाहिये। ९ त्रिवि-ष्टप तीर्थ का स्नान करके त्रिविष्टपेश्वर का पूजन और यथाशक्ति स्वर्ण भेट करना चाहिये। १० बाद को दुबारा त्रिविष्टप तीर्थ पर स्नान करके कर्कोटेश्वर। ११ महामाया का दर्शन और १२ कपालेश्वर का पूजन करना चाहिये। अन्त में स्वर्गद्वार तीर्थ पर स्नान करके १३ स्वर्गद्वारेश्वर और १४ कालभैरव के दर्शन करने के बाद यह यात्रा समाप्त हो जाती है।

[३ महाकाल यात्रा]

पहिले रुद्रसागर में स्नान करके कोटेश्वर की बन्दना करना और श्री महाकालेश्वर की यथाविधि

पूजन करके यात्रा का आरम्भ करना और मध्य में और अन्त में क्रमानुसार श्री महाकालेश्वर का दर्शन और बारम्बार नमस्कार करके उनकी कृपा से यात्रा की सफलता और संसार सागर से अपने उद्धार के लिये प्रार्थना करके इस यात्रा को समाप्त करना चाहिये।

१ कोटेश्वर — २ महाकालेश्वर
३ कपालमोचन तीर्थ व घृत दान करना। — ४ कपलेश्वर स्नान
५ हनुमत्केश्वर — ६ पैप्पलेश्वर
७ स्वप्नेश्वर — ८ ईशानेश्वर
९ सोमेश्वर — १० वैश्वानरेश्वर
११ लकुलीशरुद्र — १२ गङ्गानेश्वर
१३ विघ्नविनायक — १४ महाकाल (२)
१५ विघ्न विनाशक के दर्शन करना।
१६ प्राचीशंवल तीर्थ पर १०० घट जल से स्नान करना। विघ्न विनायक को न उलांग पीछे लौटकर
१७ पुष्पदंतेश्वर — १८ दंडपाणि भैरव
१९ गुह्येश्वर — २० दूसरी बार महाकालेश्वर का दर्शन
२१ दुर्वासेश्वर — २२ कालेश्वर
२३ विधीश्वर — २४ यात्रेश्वर (श्रीमहा-

कालेश्वर) के तीसरी बार दर्शन और प्रार्थना करके यात्रा पूर्ण करनी चाहिये।

[४ विष्णुयात्रा]

अवंतिकापुरी में श्रीकृष्ण भगवान विद्याभ्यास के लिए सांदीपन ऋषि के आश्रम में निवास करते थे। उस समय (१) अंकपात (२) शंखोद्धार (३) गोविन्द (४) चक्रपाणि (५) विश्वरूप यह पांच स्थान उनके चरणस्पर्श से पवित्र हुये थे इसलिये ये विष्णुक्षेत्र कहलाते हैं। इन क्षेत्रों में से चक्रपाणि क्षेत्र क्षिप्राजी के उत्तर किनारे पर है और विश्वरूप क्षेत्र सिंहपुरी में। शेष तीनों क्षेत्र अंकपात में सम्मिलित हैं।

(१) मंदाकिनी तीर्थ में स्नान करना (२) राम (३) जनार्दनजी के दर्शन करना। (४) शंखोद्धार तीर्थ में स्नान करके (५) बलराम (६) केशव के दर्शन करना।

गौमती कुण्ड में स्नान करके गोविंद का पूजन और ७ चक्रपाणि, शंखोद्धार, अंकपात ८ विश्वरूप क्षेत्रों में विष्णु देवताओं के दर्शन करना ९ करीकुण्ड में स्नान करके फिर बलराम और केशव

का दर्शन करना फिर गौमतीकुण्ड में स्नान करके गोविंद जी का पूजन और बलदाऊ जी का दर्शन १० चित्रा जी का स्नान करके केशव का पूजन करना इसके बाद ११ अंकपात तीर्थ में रात्री को निवास करके विष्णुभगवान् का ध्यान करना और दूसरे दिन वहाँ पर यथाशक्ति ब्राह्मणों सहित भोजन करने से यात्रा परिपूर्ण होती है।

इसके सिवाय यदि शक्ति होवे तो:—

(१ शंखोद्धार क्षेत्र में—गौ दान।

(२) विश्वरूप क्षेत्र में—अश्व दान।

(३) गोविंदक्षेत्र में—गज दान

(४) चक्रपाणिक्षेत्र में—सर्व वस्तु दान करना।

(५) अंकपात क्षेत्र में—द्वादशी के दिन व्रत करके यथा विधि विष्णुभगवान् का पूजन और श्राद्ध करना महा पुण्यदायक है इससे जन्म-जन्म के पापों का नाश होता है।

[५ पंचेशानीयात्रा]

इस यात्रा में अवन्तिकाक्षेत्र के चार द्वाराधिपति और क्षेत्राधिपति श्री महाकालेश्वर इन पांच देवताओं के स्थानों पर स्नान, दान, दर्शन

व पूजनादि यथाविधि किया जाता है इसके देवता निम्नलिखित हैं—

१ श्रीमहाकालेश्वर क्षेत्राधिपति

२ पिंगलेश्वर ३ कायावरणेश्वर

४ विल्वेश्वर ५ दर्दुरेश्वर

इस यात्रा में पूर्व द्वारपर रथदान, पश्चिमद्वार पर अश्वदान, उत्तर द्वार पर वृषभदान, दक्षिण द्वार पर गजदान और अमावस्या के दिन श्री महाकालेश्वर में सर्व शृंगार सहित धेनु दान करना महापुण्यदायक है।

[६ पंचकोशी, चारद्वार अष्टतीर्थी यात्रा]

यह यात्रा वैशाख कृष्ण १० से प्रारम्भ होकर १४ तक १, पंचकोशी और २, चारद्वार नामक दोनों यात्रायें नीचे लिखे माफ़िक होती हैं और वैशाख कृष्ण अमावस्या को दोनों यात्राओं के यात्री और अन्य पुरुष मिलकर अष्टतीर्थी यात्रा करके इन यात्राओं को मंगलेश्वर तीर्थ पर समाप्त करते हैं।

पंचकोशी

(१) पंचकोशी—वैशाख कृष्ण १० के दिन संध्या समय श्री नागचन्द्रेश्वर के दर्शन करके

यात्री लोग उज्जैन से चलते हैं और पिंगलेश्वर स्थान पूर्व द्वार पर पहुँचकर रात्रि को विश्राम करते हैं, एकादशी के दिन वहाँ पर स्नान दान और पिंगलेश्वर महादेव का पूजन करके वहाँ से रवाना हो जाते हैं और सायंकाल के समय कायावरोहणेश्वर दक्षिण द्वार पर पहुँचकर रात्रि को वहाँ विश्राम लेते हैं। द्वादशी के दिन स्नान दान और कायावरोहणेश्वर महादेव का पूजन करके वहाँ से रवाना होकर संध्या समय विल-केश्वर पश्चिम द्वार पर पहुँच कर रात्रि को विश्राम करते हैं, त्रियोदशी के दिन स्नान, दान और विलकेश्वर महादेव का पूजन करके यहां से रवाना होकर सायंकाल को दर्दुरेश्वर के उत्तर द्वार पर पहुँचकर रात्रिको विश्राम करते हैं। चतुर्दशी के दिन वहाँ स्नान दान और दर्दुरेश्वर महादेव का पूजन करके यात्री फिर पूर्व द्वार पिंगलेश्वर के दर्शन करते हुए संध्यासमय तक उज्जैन में आकर श्री नागचन्द्रेश्वर के दर्शन करके रात्रि को क्षिप्रा जी के पार विश्राम करते हैं और अमावस्या को अष्टतीर्थी यात्रा करके अपनी यात्रा को समाप्त करते हैं।

चारद्वार

(२) चारद्वार की यात्रा करने वाले यात्री वैशाख कृष्ण ११ से लेकर १४ तक प्रति दिन संध्या समय श्री नागचन्द्रेश्वर के दर्शन करके (१) पिंगलेश्वर (२) कायावरोहणेश्वर (३) बिलकेश्वर (४) दर्दुरेश्वर चार द्वारों में से एक-एक द्वार पर एक-एक रात्रि में जाते हैं और द्वारेश्वर का दर्शन करके सूर्योदय के पहिले ही अपने अपने घर लौट आते हैं और अमावस्या के दिन अन्य यात्रियों के साथ अष्टतीर्थी यात्रा करके अपनी यात्रा को सम्पूर्ण करते हैं।

अष्टतीर्थी यात्रा

इस यात्रा में २८ तीर्थ क्षिप्रा नदी के पश्चिम और उत्तर के किनारे पर हैं। वैशाख की अमावस्या के दिन रुद्रसागर में स्नान व नित्यकर्म करके इस यात्रा को प्रारम्भ करना चाहिए।

नं० नामतीर्थ दान पता देवस्थान

१—कर्कराजतीर्थ—घृतसहितपात्रदान—क्षिप्रा के बीच में।

२—नृसिंह तीर्थ—मृगचर्मदान—नृसिंहघाट पर

३—नीलगंगासंगमतीर्थ—वस्त्रदान—दत्त के अखाड़े के सामने।

४—पिशाचमोचन तीर्थ—सवत्स गौदान—दत्त के अखाड़े के सामने।

५—गंधवती तीर्थ—श्राद्ध करना—मनकामनेश्वर के सामने।

६—केदारेश्वर तीर्थ—गाय बैल दान—क्षिप्रा के पुल के पास।

७—चक्रतीर्थ—शंख, शस्त्र, विमानदान—आपाराव के गणेश जी के नीचे।

८—सोमतीर्थ—गृह, दास, दासी दान—सोमघाट पर।

९—देवप्रयागतीर्थ—गुड़, धेनु दान—प्रयागराज के पास।

१०—प्रयागवेणीतीर्थ—तिल, धेनु, दान—मकर प्रयाग पर।

११—ऋणमोचनतीर्थ—स्वर्णदान—मकर प्रयाग के आगे।

१२—योगतीर्थ (कपिलाश्रम)—जल, धेनु दान—कपिल मुनि के नीचे।

१३—घृतकुल्यातीर्थ—घृत, धेनु, दान—प्रथम नाला

१४ मधुकुल्यातीर्थ—मधुदान—दूसरा नाला ।

१५ ऊषरतीर्थ—फल मूलादिदान—नावघाट के ऊपर

१६ नरादित्यतीर्थ—रथदान—नावघाट के आगे ।

१७ केशवादित्यतीर्थ—अन्नदान—किले के बुर्ज के नीचे

१८ कालाग्नितीर्थ—पूर्णपात्रदान—कालभैरव के घाट पर ।

१९ द्वादशार्कतीर्थ—अजादान—गंगाघाट के पीछे ।

२० दशाश्वमेधतीर्थ—श्वेताश्वदान—गंगाघाट के सामने ।

२१ मंगलानाथतीर्थ—गुड़, अन्न, बैल, लाल वस्त्र दान ।

२२ स्वर्गतासंगमतीर्थ—जलपात्रदान—स्वर्गता संगम पर ।

२३ शक्तिभेदतीर्थ—शय्यादान, कांसापात्रदान, सिद्धनाथ में ।

२४ पापमोचन (हंसतीर्थ)—छायापात्र दान—ढालीखेड़ी के नीचे ।

२५ प्रेतशिलातीर्थ—घट, छत्र, उपानह दान कालीदह की कुस के पीछे ।

२६ नवनदी संगमतीर्थ—शकटदान—कालीदह के महल के नीचे कुंड में ।

२७ मंदाकिनीतीर्थ—अन्नादिदान।

२८ ब्रह्मतीर्थ—(पितामहतीर्थ) श्राद्ध और पुस्तक, गौ, पृथ्वी, स्वर्णदान। कालीदह के महल पर गहरे कुंड पर।

[७ सप्तसागर यात्रा]

इस यात्रा को अधिक मास (पुरुषोत्तम मास) में यात्री लोग करते हैं। कोई-कोई यात्री सात सागरों में से प्रति दिन एक-एक सागर में स्नान दानादिक क्रिया करते हैं। कोई यात्री सातों सागरों की यात्रा एक ही दिन में समाप्त करके ब्राह्मण भोजन कराके यात्रा को पूर्ण करते हैं। उसकी विधि इस प्रकार है—

(१) रुद्र सागर में स्नान करके नमक और बैल का दान देकर श्री महाकालेश्वर और हर-सिद्धि देवी का दर्शन करना चाहिए।

(२) पुष्कर सागर में स्नान करके पुखराज रत्न और चना और गुड़ का दान देना चाहिये।

(३) क्षीरसागर में स्नान करके क्षीरपात्र का दान देकर शेष नारायण भगवान् के दर्शन करना चाहिये।

(४) गोवर्धन सागर में स्नान करके गोधूम और गुड़ का दान करके महावीर का दर्शन करना।

(५) रत्नाकर सागर में स्नान करके पंच रत्नों का दान और सप्तऋषि के दर्शन करना।

(६) विष्णु सागर में स्नान करके विष्णु की स्वर्ण प्रतिमा का दान और जनार्दनजी का दर्शन।

(७) पुरुषोत्तम सागर में स्नान करके कांसा पात्र दान करना चाहिये।

[८ नगर प्रदक्षिणा]

इस में निम्न लिखित पांच नगर देवता हैं, १ पद्मावती २ स्वर्णश्रृङ्गा ३ अवंतिका ४ अमरावती ५ उज्जयनी।

इस समय यात्रा नीचे लिखे माफिक रीति से होती है। कार्तिक शुक्ल नवमी (कूष्माण्ड नौमी) के दिन कर्कराज तीर्थ में स्नान करके कर्केश्वर का दर्शन और पंच रत्न सहित भूरे कोले का दान इसके पश्चात् नागतलाई (नागतीर्थ) में स्नान करके नागेश्वर, लवांकुश, यम धर्मराज और साडू माता का दर्शन इसके बाद ब्रह्मकुंड में स्नान करके गो प्रदान, स्त्री होवे तो सौभाग्य

वस्तुओं का दान और खण्डेश्वर व पत्तनेश्वर के दर्शन तदनन्तर नीलगंगा कुंड पर वंदन करके महावीरजी का दर्शन और वहाँ से फिर कर्कराज तीर्थ पर स्नान करके कर्केश्वर के दर्शन, इस प्रकार नगर की प्रदक्षिणा पूर्ण करके यात्री हरसिद्धि देवी का दर्शन करके यात्रा समाप्त करते हैं।

[९ नरदीप यात्रा]

यह यात्रा नरदित्य के पास दक्षिणायन सूर्य का रथ करके निकालने की है । उसका विस्तार वर्णन बड़े ग्रन्थों में लिखा है। इसका इस समय प्रचार न होने के कारण यहाँ विस्तार पूर्वक नहीं लिखा है।

अन्य तीर्थ

उपरोक्त तीर्थों के सिवाय और भी बहुत से तीर्थ हैं इन में से कुछ तीर्थ कुंड रूप में कोई वापी रूप में कोई तीर्थ सागर रूप में कोई नदी रूप में कोई मुक़ाम देवताओं के नामसे और कोई खाली ही प्रसिद्ध हैं वे नीचे लिखे माफ़िक हैं—

१ वन्हितीर्थ — २ विद्याधरतीर्थ

३ मर्कटेश्वर — ४ वीरभद्र तीर्थ

५ यमेश्वर तीर्थ	६ गंधाणेश्वर तीर्थ
७ दुर्वासेश्वर तीर्थ	८ विधीरा तीर्थ
९ वाल्मीकेश्वर तीर्थ	१० भीमेश्वर तीर्थ
११ दुर्गेश्वर तीर्थ	१२ जयेश्वर तीर्थ
१३ शिवद्वार तीर्थ	१४ यज्ञवापी तीर्थ
१५ गोपेश्वर तीर्थ	१६ शिवतीर्थ
१७ सरवार्त तीर्थ	१८ शुद्धेश्वर
१९ गायीन्द्र तीर्थ	२० भूलेश्वर तीर्थ
२१ घुश्येश्वर तीर्थ	२२ रतीकाम तीर्थ
२३ विष्णुवापी तीर्थ	२४ पापमोचन तीर्थ
२५ नीलकंठ तीर्थ	२६ नीलगंगा तीर्थ
२७ दूधतलाई तीर्थ	२८ पुष्कर तीर्थ
२९ रन्यतासंगम तीर्थ	३० धर्मसरीतीर्थ
३१ गयातीर्थ	३२ जलेश्वर तीर्थ
३३ गौमती तीर्थ	३४ नागतीर्थ
३५ रुषभनाम गिरीतीर्थ	३६ कुशतीर्थ
३७ कीर्तिस्थंभतीर्थ	३८ अगस्तेश्वर तीर्थ
३९ मल्लिकार्जुन तीर्थ	४० मकरप्रयाग तीर्थ
४१ त्रिवेणी तीर्थ	४२ सूर्य तीर्थ
४३ उत्तरमानस तीर्थ	४४ दक्षिणमानस तीर्थ
४५ दशाश्वमेध तीर्थ	४६ वृद्धगया तीर्थ

४७ शंकरादित्य तीर्थ
४८ केशवार्क तीर्थ
४९ रेणु तीर्थ
५० व्यास तीर्थ
५१ कलहनाशन कुंड
५२ मनिकर्णिका कुंड
५३ अप्सरकुंड
५४ महिष कुंड
५५ रूपकुंड
५६ अनंग कुंड
५७ करी कुंड
५८ गौमनी कुंड
५९ अजागंध कुंड
६० अनरक कुंड
६१ नरदीप कुंड
६२ दुग्ध कुंड
६३ सुंदर कुंड
६४ वामन कुंड
६५ शंकरवापी
६६ यज्ञवापी
६७ पितामहवापी
६८ विष्णुवापी
६९ धर्म सरोवर
७० खड्ग सरोवर
७१ रम्यसरोवर
७२ विंदुसरोवर
७३ ब्रह्मसरोवर
७४ विष्णु सरोवर
७५ स्वर्णतुर तीर्थ
७६ कुटुम्बेश्वर तीर्थ
७७ स्वर्गद्वार तीर्थ
७८ इन्द्रतीर्थ
७९ गोपतीर्थ
८० विजय तीर्थ
८१ रामतीर्थ
८२ सौभाग्य तीर्थ
८३ शंखावत तीर्थ
८४ दुर्धर्ष तीर्थ
८५ गंगातीर्थ
८६ घटेश्वर तीर्थ
८७ कंथडेश्वर तीर्थ
८८ उत्तरेश्वर तीर्थ

उपयोगी पुस्तकें

उज्जयनी मार्ग दर्शिका उज्जैन शहर का ऐतिहासिक व क्षेत्रमहात्मका विस्तार पूर्वक वर्णन सचित्र

इस ग्रंथ को पंडित केशवराव बलवंत साहब डोंगरे इन्स्पेक्टर जनरल लेण्डरिकार्ड गवालियर स्टेट ने बनाकर बड़ा ही उपकार किया है इसमें उज्जैन क्षेत्र का पुराणों से लिया हुआ महात्म, पहिले से आज तक का इतिहास का विस्तार पूर्वक वर्णन भली भांति दर्शाया है। मूल्य हिन्दी भाषा की क़ीमत ।।।) आने मराठी की १।।) है।

क्या आप हिन्दी भाषा शीघ्र ही पढ़ाने लिखाने का प्रबन्ध अपनी पाठशालाओं में करना चाहते हैं ?

यदि हाँ ! तो जगत् प्रसिद्ध मुन्शी चतुरविहारीलाल बुकडिपो उज्जैन कृत हिन्दी स्कूली पुस्तकें जिनका प्रचार ५० साल से आज तक लाखों की संख्या में सालियाना बिना विज्ञापन ही भारतवर्ष और देशी राज्यों व फिजी टापू और दीगर सरकारी, जैन, सनातन धर्म, आर्यसमाज, क्रिश्चियन लड़कों की व कन्या-पाठशालाओं में धड़ाधड़ हो रहा है, पढ़ाइयेगा। इनका कोने-कोने में प्रचार होने का एकमात्र कारण यही है कि इन पुस्तकों की भाषा सरल सब प्रांतों में समझने योग्य और व्याकरण से शुद्ध है जिनके लिये भारत के धुरंधर संस्कृत और इङ्गलिश के प्रोफ़ेसरों के दिये हुये अनेकानेक सार्टीफ़िकट आये हैं और क़ीमत भी सर्व साधारण के लाभार्थ बहुत ही कम रक्खी गई है। आशा है कि प्रत्येक हिन्दी प्रेमी इन हिन्दी की उत्कृष्ट पुस्तकों का अपने यहाँ प्रचार कर साहित्य सेवा में हमारा हाथ बटावेंगे और सब राज्यों की टेक्सट् बुक कमेटियाँ निर्पक्ष होकर अपने यहाँ कोर्स में प्रचलित करने की कृपाकर हम को उत्साहित करेंगी। अधिक मंगाने पर भरपूर कमीशन दिया जावेगा। इनके सिवाय सर्व प्रकार की पुस्तकें मिलने के लिये बड़ा सूचीपत्र मुफ़्त मंगवाइयेगा।

क्षेत्र मार्त्तण्ड ।

ऐसी उत्तम पैमायश की पुस्तक कहीं नहीं छपी

(पैमायश की सर्वोत्तम पुस्तक)

इस पुस्तक में पैमायश की कुल परिभाषाएं और रीतें ऐसी सरल और उत्तम पद्य में लिखी गई हैं जिन्हें विद्यार्थीगण तुरन्त याद करके अति लाभ उठा सकते हैं इसमें ७७५ प्रश्न दिये हैं। इस पुस्तक को सरस्वती आदि समाचार पत्रों के सम्पादक और अन्य गणितज्ञों ने बहुत प्रशंसा की है और शिक्षा-विभाग के अधिकारियों ने पसन्द करके कहीं तो कोर्स में जारी की है और कहीं पर इनाम में देने के लिए बहुत प्रतियाँ ख़रीदी हैं। यह पुस्तक अपर प्रायमरी और मिडिल क्लास के विद्यार्थियों और पटवारियान और क़ानूनगोयान व नायब तहसीलदारान व तहसीलदारान साहिबान के वास्तह अति उपयोगी है। आठवीं बार सुन्दर टाइप में अति उत्तम छपी हुई १६२ पेज की पुस्तक का मूल्य केवल ।।=) है।

नोट—इसका हल यानी कुञ्जी क़ीमत ।–) आने।

सचित्र भूगोल हिन्दुस्तान नया ।

इसका प्रचार भारत के प्रत्येक हिस्से में हो रहा है

इसको मुन्शी चतुरबिहारीलाल साहिब असिस्टेंट इन्सपेक्टर मदारिस मालवा सर्किल ने अति उत्तम तैयार किया है इसमें आज तक की नई तर्मीम सब दर्ज हैं और बारह चित्र कलकत्ता, बम्बई, मद्रास, देहली, अमृतसर, अयोध्या, बनारस, उज्जैन, आगरा, जगन्नाथपुरी आदि प्रसिद्ध स्थानों के देखने योग्य छपाये गये हैं। यह पुस्तक भारतवर्ष के अधिकांश स्कूलों में प्रचलित है मूल्य ≡) है।

सत्यनारायण की कथा गायन

इस पुस्तक में दोहा, चौपाई, भजन, गज़ल, दादरे, आरती आदि हारमोनियम पर अति उत्तम गाने योग्य हैं, मूल्य =) मात्र है।

—o—
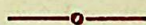
आवश्यक सूचना

हमारे पुस्तकालय में पुराण, इतिहास, रामायण, वेदान्त, धर्मशास्त्र, कर्मकाण्ड, न्याय, कोष, काव्य, व्याकरण, नाटक, अलंकार, छन्द, वैद्यक, ज्योतिष, (फुटकर) साम्प्रदायिक, अनुष्ठान, मंत्रशास्त्र, स्तोत्र पाठ, संगीत-राग, उपन्यास, स्कूली बालकोपयोगी, स्त्रियोपयोगी हिन्दी, संस्कृत, उर्दू, मराठी, गुजराती, अँग्रेज़ी भाषा के अनेक ग्रन्थ बेचने के लिए तैयार हैं। एक बार परीक्षा कर अवश्य लाभ उठाइयेगा।

मिलने का पता—

चतुरबिहारीलाल आनन्दीलाल बुकसेलर

उज्जैन (सी० आई०)

श्री रामानन्द भजनमाला ।

(अयोध्या निवासी स्वामी रामकिंकरदास कृत)

प्रिय पाठकगण ! आज तक आपके देखने में भजनों की सैकड़ों पुस्तकें आई होंगी परन्तु यह पुस्तक भी ईश्वर प्रेमियों के लिए अमूल्य रत्न ही है, इसको अयोध्या निवासी स्वामी रामकिंकर-दासजी ने बनाकर संसार में बड़ा ही उपकार किया है, इसमें भजन, गौरी, ग़ज़ल, क़व्वाली, बनजारा, होली, रासड़ा, लावनी, क़हरवा, बड़हंस, पीलू, जोगिया, ठुमरी, गुरुमहिमा, नाटक आदि की ऐसी ऐसी उत्तम चीज़ें लिखी गई हैं कि जिनके पढ़ने से अति आनन्द प्राप्त होता है इसकी ज़्यादह तारीफ़ क्या की जावे आपको देखने से ही इसका अपूर्व गुण मालूम होगा । आशा है कि सम्पूर्ण सनातनधर्मी भक्त जन संत महात्मा आदि इस पुस्तक को देखकर स्वामीजी के परिश्रम को सफल करेंगे, इस पुस्तक को बम्बई के उत्तम टाइप में छपवा कर अति सुन्दर जेब में रखने के लायक़ छोटी विलायती कपड़े की जिल्द बहुत अच्छी बनवाई गई है । मूल्य प्रति पुस्तक ||)

सर्व प्रकार की पुस्तकें मिलने का पता—

चतुरविहारीलाल आनन्दीलाल बुकसेलर्स,
पब्लिशर्स पटनी बाज़ार, उज्जैन सिटी, (सी० आई०) ।